दवा ए दिल

पीर जुल्फीकार नक्शबंदी दा.ब.

1. नमाज़ तमाम इबादतों का मजमुआ
2. मां की मीसाली तरबीयत
3. दिल एक निराली बस्ती

इन मजमूनो को उर्दू किताब “दवा ए दिल”, से लिप्यांतरण किया है.

1. नमाज़ तमाम इबादतों का मजमुआ

हुजूर صلى الله عليه وسلم का इरशाद हे, ये दरख्त व पथ्थर अल्लाह की इबादत करते हे, किताबो मे मिलता हे अल्लाह ने दरख्तो को कियाम की हालत मे पेदा किया, सारी जिन्दगी कियाम की हालत मे रेहते हे, कीडो को सजदे की हालत मे पेदा किया, सारी जिन्दगी सजदे की हालत मे रेहते हे, पहाडो को अल्लाह ने कायदे अत्ताहीय्यात की शकल मे पेदा किया, सारी जिन्दगी इस हालत मे रेहकर अल्लाह की तारीफ बयान करते हे.

ए इन्सान इन सबको तो अल्लाह ने एक-एक अमल दिया हे वो एक-एक अमल कर रहे हे, और हमे तो तमाम आमाल का मजमुआ नमाज की शकल मे अता किया गया हे, काश कि हम नमाज को बेहतर बनाने की पूरी कोशिश करते, जब हम कियाम करते हे तो उन

फरिश्तो से मिली हूली हालत मे होते हे जो कियाम की हालत मे पेदा हुवे, रूकु मे होते हे, तो उन फरिश्तो से मिली हूली हालत मे होते हे जो रूकु मे पेदा हुवे, सजदे की हालत मे होते हे तो उन फरिश्तो से जो सजदे की हालत मे पेदा हुवे और तस्बीह बयान कर रहे हे, तो हमे नमाज मे कितने मकामात मिल रहे होते हे.

इसलिये हुजूर صلى الله عليه وسلم ने फरमाया तुम किसी साया दार दरख्त के नीचे पेशाब पाखाना मत करो, सहाबा(रदी) मे से एक ने पूछ लिया के इस मे क्या हुकम हे? फरमाया के जब इसका साया घटता और बढता हे तो वो दरख्त अल्लाह की बारगाह मे सजदारेज हो रहा होता हे, तो जब दरख्त भी सजदा करते हे तो हम इसमे सुस्ती करे, कितनी अजीब बात हे सारी मख्लुक को मकामे खौफ हासिल हे दुवा करनी चाहिये कि अल्लाह ये खौफ हमे भी अता फरमाये ताकी हम गुनाहो से बच सके.

2. मां की मीसाली तरबीयत

इमाम गजाली और उनके भाई अहमद गजाली दोनो बचपने मे ही यतीम हो गये थे, मगर दोनो की तबीयातो मे बडा फर्क था, इमाम गजाली एक बडे मुकररीर थे, और मस्जिद के इमाम थे, उनके भाई अहमद गजाली भी बडे नेक आलीम थे, लेकिन वो

मस्जिद मे नमाज पढने के बजाये अपनी अलग नमाज पढ लिया करते थे, एक मरतबा इमाम गजाली ने अपनी वालीदा से कहा कि अम्मी लोग मुज पर एतराज करते हे कि तु इतना बडा मुकररीर हे और मस्जिद का इमाम भी हे, मगर तेरा भाई तेरे पीछे नमाज नही पढता, आप भाई से कहीये कि वो मेरे पीछे नमाज पढा करे, मा ने बुला कर नसीहत की चुनाचे अगली नमाज का वकत आया तो इमाम गजाली नमाज पढाने लगे, उनके भाई ने भी नियत बाध ली, लेकिन अजिब बात ये हुवी कि एक रकात पूरी होने के बाद जब दुसरी रकात शुरू हुवी तो उनके भाई ने नमाज तोड दी, और जमात से बाहर निकल आये, जब इमाम गजाली ने नमाज खतम की तो उनके बहुत शर्मिन्दगी मेहसूस हुवी, और परेशान गमजदा दिल के साथ घर वापस आये, मा ने पूछा बडे परेशान नजर आते हो, केहने लगे अम्मी भाई ना जाते तो ज्यादा बेहतर होता, ये गये और एक रकात पढने के बाद दुसरी रकात मे वापस आगये, और आकर अलग नमाज पढली, मा ने बुला कर पूछा कि बेटा तुने ऐसा कयु किया, छोटा भाई केहने लगा कि पेहली रकत तो ठीक पढायी, मगर दुसरी रकात मे अल्लाह की तरफ ध्यान देने के बजाये ईनका ध्यान किसी और जगह था, इसलिये मेने ईनके पीछे नमाज

छोड दी, और अपनी अलग नमाज पढली, मा ने इमाम गजाली से पूछा कि क्या बात हे? केहने लगे बात बिलकुल ठीक हे, मे नमाज से पेहले मसाइल की एक किताब पढ रहा था और नीफास यानी औरत के बच्चा पेदा होने के बाद आने वाले खून के मसाइल थे जिसके बारे मे गौर व फिकर कर रहा था, जब नमाज शुरू की तो पेहली रकात तो अल्लाह के ध्यान मे गुजरी, लेकिन दुसरी रकात मे वो नीफास के मसाइल मेरे जेहन मे आने लगे, उसमे थोडी देर के लिये जेहन दुसरी तरफ मुतवज्जेह हो गया, ये मुज से गलती हो गई, मा ने उस वकत एक ठडी सास ली, और कहा कि तुम दोनो मे से कोई भी मेरे काम का ना बना, इस जवाब को जब सुना तो दोनो भाई परेशान हो गये, इमाम गजाली ने तो माफी माग ली थी, मगर दुसरा भाई पूछने लगा अम्मी मुजे तो कश्फ हुवा था, इस वजह से नमाज तोड दी थी, मे आप के काम का कयु नही बना, मा ने जवाब दिया तुम मे से एक नीफास के मसाइल सोच रहा था और दुसरा पीछे खडा इसके दिल को देख रहा था, तुम दोनो मे से अल्लाह की तरफ तो एक भी मुतवज्जेह ना था.

3. दिल एक निराली बस्ती

जब इन्सान दिल को सवारने की मेहनत शुरू करता हे तब पता चलता हे कि उस दिल मे कितना काम बाकी

हे दिल का सवरना आसान नही मुद्दते गुज़र जाती हे तब जाकर इन्सान का दिल सवरता हे.

विराने भी देखे हे, आबादी भी देखी हे जो उजडे तो फिर न बसे दिल वो निराली बस्ती हे दिल का उजडना सहल सही, बसना खेल नही भाई बस्ती बसना खेल नही, बस्ती बसते-बसते बसती हे.

जिस तरह बस्तियो का आबाद होना कोई आसान काम नही होता उमरे गुज़रती हे तब वो आबाद होती हे बिल्कुल इसी तरह उमरे गुज़रती हे तब जाकर दिल आबाद होता हे बिगडता जल्दी हे सवरता बडी मुशकिल से हे.

'कल्ब अबदुल्लाह' जो हे वो 'अर्श अल्लाह' हे, अल्लाह का अर्श हे, देखिये जब हम बैतुल्लाह को बैतुल्लाह कहते हे किस लिये? अल्लाह रब्बुलइज्जत वहा रहते तो नही हे बल्कि इसलिये कि अल्लाह की तजल्लियाते ज़ातिया का वहा पर वुरूद होता हे इसलिये उसको बैतुल्लाह कहा गया हे, इसी तरह जब मोमिन अपने दिल को सवार लेता हे तो उसका दिल भी अल्लाह रब्बुलइज्जत की तजल्ली गाह बन जाता हे. यह दिल अल्लाह रब्बुलइज्जत की गुजरगाह बनी, इसलिये दिल को अल्लाह का घर कहा.